

भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय स्टॉक और निधियों का प्रवाह 2022-23

सूरज एस, इशु ठाकुर, मौसमी प्रियदर्शिनी और अभिषेक नेहरा द्वारा[^]

घरेलू अर्थव्यवस्था का वित्तीय संसाधन संतुलन¹ 2021-22 के 1.9 प्रतिशत घाटे की तुलना में 2022-23 में जीडीपी के 2.5 प्रतिशत घाटे में रहा। घरेलू क्षेत्रों की निवल वित्तीय संपदा² पिछले वर्ष के 29.0 प्रतिशत की तुलना में 2022-23 में जीडीपी के 24.9 प्रतिशत तक गिर गई लेकिन यह महामारी-पूर्व स्तर अर्थात् 2019-20 के 24.2 प्रतिशत से ऊपर रही। अन्य निक्षेपागार निगमों की वित्तीय आस्तियों और देनदारियों में 2014-15 के बाद से उच्चतम वृद्धि का अनुभव किया क्योंकि परिवारों और व्यवसायों से ऋण की मांग में तेजी बनी रही। गैर-वित्तीय निगमों ने पीयूएनएफसी के ऋण-इक्विटी अनुपात में कमी के बीच अपने संसाधन संतुलन में सुधार किया।

भूमिका

अर्थव्यवस्था के संस्थागत क्षेत्रों³ में वित्तीय लेनदेन और वित्तीय आस्तियों व देनदारियों की बकाया स्थितियों का विश्लेषण करने के लिए वित्तीय लेखा एक व्यापक ढांचा प्रदान करते हैं। कोपलैंड के निधि प्रवाह के अग्रणी विश्लेषण (कोपलैंड 1949) में "निधियों के प्रवाह (एफओएफ)" के रूप में पेश किए गए वित्तीय लेखा महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुए हैं, वित्तीय अंतर्संबंध का आकलन करने, संभावित कमजोरियों को उजागर

करने और समष्टि आर्थिक उपायों में स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में प्राधान्यता प्राप्त कर रहे हैं। किससे-किसको⁴ (एफडब्ल्यूटीडब्ल्यू) के आधार पर संरचित, वित्तीय लेखा बचत, निवेश और क्षेत्रों में ऋणग्रस्तता में संरचनात्मक बदलावों को उजागर करते हैं, आर्थिक विकास, मौद्रिक नीति संचरण और वित्तीय मध्यस्थता के वित्तपोषण में अंतर्दृष्टि बढ़ाते हैं। वित्तीय लेखा की प्रासंगिकता, विशेष रूप से, 2007-09 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद बढ़ गई, जब प्रणालीगत जोखिमों की पहचान करने के लिए वित्तीय प्रवाह की निगरानी की आवश्यकता स्पष्ट हो गई। इस प्रकार, वित्तीय लेखा का संकलन जी-20 डेटा अंतराल पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

इस पृष्ठभूमि में, भारतीय रिजर्व बैंक के वित्तीय लेखा के संकलन ढांचे को वित्तीय स्टॉक और निधियों के प्रवाह (एफएसएफ) के रूप में जाना जाता है, जो वित्तीय आस्तियों और देनदारियों के क्षेत्रीय और लिखत-वार स्टॉक और प्रवाह के संबंध में विस्तृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह लेखा घरेलू बचत और उधार पैटर्न में परिवर्तनों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं जो वित्तीय परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2022-23 के दौरान, विशेष रूप से परिवारों और निगमों से ऋण की मांग मजबूत रही। सरकारी क्षेत्र 2022-23 में राजकोषीय समेकन के मार्ग पर रहा, जबकि चालू खाता घाटा (सीएडी) जीडीपी के 2.0 प्रतिशत तक बढ़ गया, जो भू-आर्थिक विखंडन और वैश्विक खाद्य, ऊर्जा और पण्य कीमतों में वृद्धि के बीच उच्च आयात लागत को दर्शाता है। चूंकि समष्टि आर्थिक और वित्तीय विकास पारस्परिक क्रिया से एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, इसलिए अंतर-क्षेत्रीय वित्तीय प्रवाह का व्यापक दृष्टिकोण संसाधन जुटाने, क्षेत्रीय वित्तीय संसाधन संतुलन और उनके संबंधित निवल वित्तीय संपदा (एनएफडब्ल्यू) में परिवर्तनों को समझते हुए एफएसएफ खातों द्वारा सर्वोत्तम रूप से लगाया जा

[^] लेखक आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग से हैं। लेखक श्री आनंद प्रकाश के बहुमूल्य सुझावों और मार्गदर्शन के लिए उनके आभारी हैं। इस आलेख में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के हैं और भारतीय रिजर्व बैंक के विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

¹ किसी क्षेत्र के वित्तीय संसाधन संतुलन (अधिशेष या घाटा) को वित्तीय आस्तियों के निवल अधिग्रहण में से देनदारियों के निवल व्यय को घटाकर मापा जाता है।

² निवल वित्तीय संपत्ति (एनएफडब्ल्यू) इक्विटी और निवेश निधि शेयरों को छोड़कर कुल वित्तीय आस्तियों और देनदारियों के स्टॉक के बीच का अंतर है।

³ संस्थागत क्षेत्रों में (i) वित्तीय निगम (एफसी); (ii) गैर-वित्तीय निगम (एनएफसी); (iii) सामान्य सरकार (जीजी); (iv) परिवार (एचएच) जिसमें परिवारों की सेवा करने वाली गैर-लाभकारी संस्थाएँ (एनपीआईएसएच) शामिल हैं। शेष विश्व (आरओडब्ल्यू) को एक वास्तविक क्षेत्र माना जाता है क्योंकि यह केवल अनिवासियों के मुकाबले घरेलू अर्थव्यवस्था के लेन-देन को दर्शाता है और विदेशों में होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों के लिए जिम्मेदार नहीं है।

⁴ "किससे-किसको" (एफडब्ल्यूटीडब्ल्यू) आधार वित्तीय लेनदेन और स्टॉक का एक विस्तृत मानचित्रण प्रदान करता है, प्रत्येक वित्तीय लिखत के लिए मूल (लेनदार) और प्राप्तकर्ता (देनदार) की पहचान करता है, इस प्रकार अंतर-क्षेत्रीय वित्तीय संबंधों और प्रणालीगत आर्थिक निर्भरताओं को स्पष्ट करता है।

सकता है। यह आलेख एफडब्ल्यूटीडब्ल्यू दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए 2022-23 के दौरान की भारतीय अर्थव्यवस्था के वित्तीय रुझानों पर गहनता से चर्चा करता है। आलेख का शेष भाग निम्नानुसार संरचित है: खंड II समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, अर्थव्यवस्था में क्षेत्रवार और लिखत-वार वित्तीय प्रवाह प्रस्तुत करता है। खंड III में क्षेत्रवार वित्तीय संसाधन संतुलन का आकलन प्रस्तुत किया गया है। खंड IV क्षेत्र-विशिष्ट वित्तीय रुझानों को विस्तार से प्रस्तुत करता है। खंड V आलेख का समापन करता है।

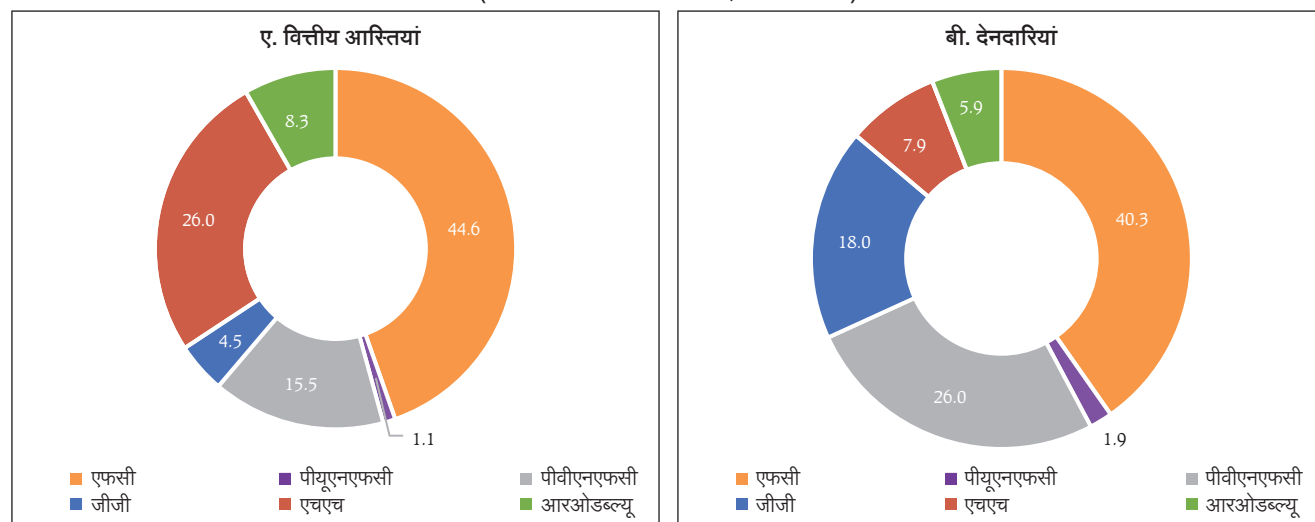
II. वित्तीय प्रवाह: क्षेत्रवार और लिखतवार

2022-23 में, घरेलू क्षेत्रों की कुल वित्तीय आस्तियों में 2021-22 के 9.9 प्रतिशत की तुलना में 9.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जबकि देनदारियों में पिछले वर्ष के 10.2 प्रतिशत की तुलना में 10.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कुल वित्तीय आस्तियों में संयुक्त रूप से 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान देने वाले परिवार (एचएच) और वित्तीय निगम (एफसी) 2022-23 के दौरान प्राथमिक अधिशेष क्षेत्र बने रहे, जो सामान्य सरकार (जीजी) और निजी गैर-वित्तीय निगमों (पीवीएनएफसी) की वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करते हैं [चार्ट 1 और 2]।

जबकि अधिकांश क्षेत्रों ने 2022-23 के दौरान अपनी देनदारियों की वृद्धि में मंदी का प्रदर्शन किया, एचएच क्षेत्र ने बैंकिंग और गैर-बैंकिंग क्षेत्रों से बढ़ी हुई उधारी के कारण तेजी दर्ज की। इसी समय, वर्ष के दौरान एचएच क्षेत्र द्वारा वित्तीय आस्ति निर्माण में वृद्धि धीमी रही। हालांकि, सार्वजनिक गैर-वित्तीय निगमों (पीयूएनएफसी) ने वित्तीय आस्तियों और देनदारियों दोनों में मजबूत वृद्धि दर्ज की।

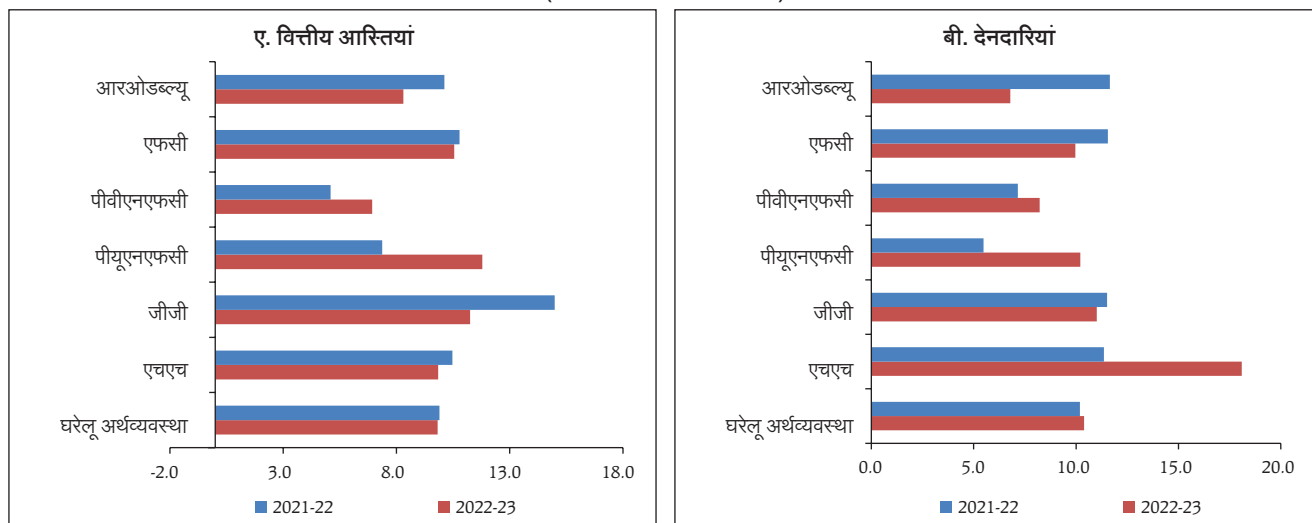
वित्तीय लिखतों में, मुद्रा और जमा, ऋण और अग्रिम, तथा ऋण प्रतिभूतियाँ एक साथ मार्च 2023 के अंत तक कुल वित्तीय आस्तियों और देनदारियों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा थीं। केंद्रीय बैंक सहित एफसी के लिए, ऋण प्रतिभूतियाँ और ऋण और अग्रिम उनकी कुल वित्तीय आस्तियों का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा थे, जबकि मुद्रा और जमा उनकी देनदारियों के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्यरत थे। एचएच देनदारियाँ मुख्य रूप से ऋण और उधार के रूप में और उनकी वित्तीय आस्तियाँ मुख्यतः मुद्रा और जमा के रूप में हैं। इक्विटी और निवेश निधियों से शेष विश्व की प्रमुख वित्तीय आस्तियों का निर्माण हुआ, जबकि ऋण प्रतिभूतियों ने उनकी देनदारियों पर अपना दबदबा बनाए रखा, जिनमें से अधिकांश केंद्रीय बैंक द्वारा समर्थित किए गए (चार्ट 3)।

चार्ट 1: वित्तीय आस्तियों और देनदारियों की संस्थागत संरचना
(मार्च 2023 के अंत तक, प्रतिशत में)



स्रोत: लेखकों की गणना।

चार्ट 2: संस्थान-वार संवृद्धि
(वर्ष-दर-वर्ष प्रतिशत में)



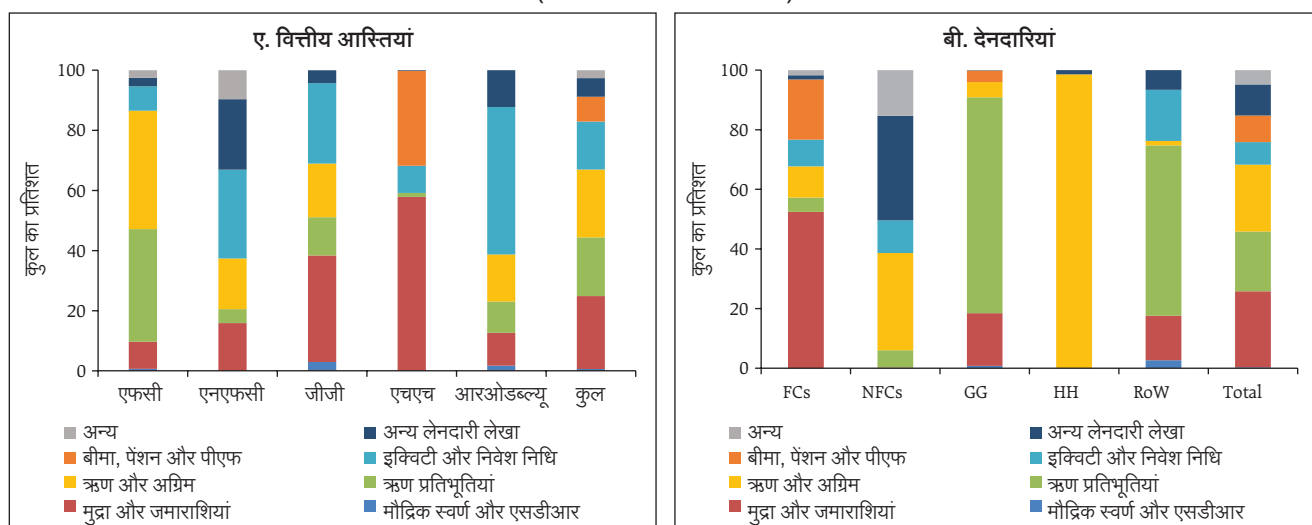
स्रोत: लेखकों की गणना।

III. वित्तीय संसाधन संतुलन

2022-23 में, भारतीय अर्थव्यवस्था का वित्तीय संसाधन संतुलन घाटे में रहा। यह घाटा मुख्य रूप से एचएच के अधिशेष में कमी के कारण, पिछले वर्ष के 1.9 प्रतिशत से बढ़कर जीडीपी का 2.5 प्रतिशत हो गया (चार्ट 4)। इसके अलावा,

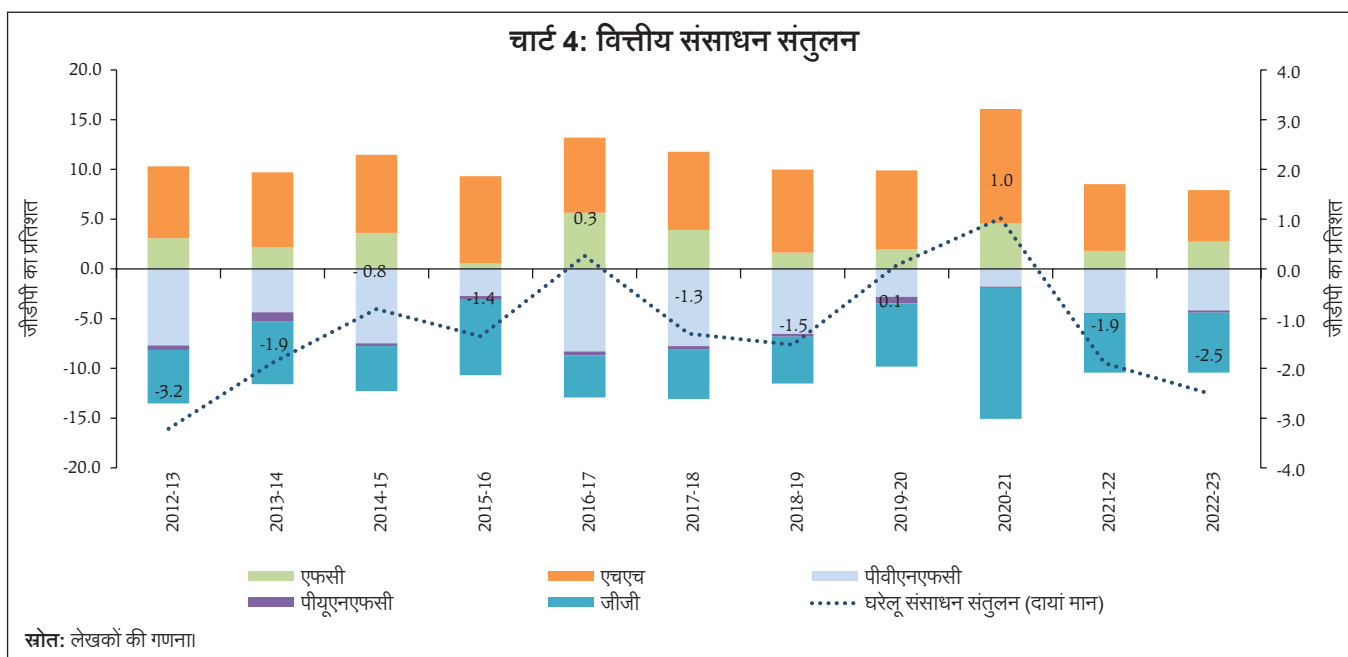
सभी घरेलू क्षेत्रों का एनएफडब्ल्यू पिछले वर्ष के 29.0 प्रतिशत से गिरावट होकर मार्च 2023 के अंत तक जीडीपी के 24.9 प्रतिशत हो गया⁵। हालांकि, एनएफडब्ल्यू महामारी-पूर्व स्तर 2019-20 में अपने 24.2 प्रतिशत से ऊपर रहा। 2022-23 में एनएफडब्ल्यू में सभी क्षेत्रों में देखी गई कमी 2020-21 में

चार्ट 3: संस्थागत लिखत धारिता
(मार्च 2023 के अंत तक)



स्रोत: लेखकों की गणना।

⁵ एनएफडब्ल्यू के मापन में इक्विटी और निवेश निधि तथा आरक्षित निधि और अधिशेष को देनदारियों से बाहर रखा गया है।



महामारी-प्रेरित विसंगति के बाद सामान्यीकरण को दर्शाती है (सारणी 1)।

IV. क्षेत्रीय वित्तीय संबंध

संस्थागत क्षेत्रों के बीच अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रयता निवल प्रवाह (उपयोग घटा स्रोत) की दिशा और परिमाण में परिलक्षित हुई [चार्ट 5]। मौद्रिक नीति के रुख में समायोजन से समायोजन वापस लेने की ओर परिवर्तन और बैंकिंग प्रणाली में अधिशेष चलनिधि में सहवर्ती गिरावट के कारण ओडीसी द्वारा आरबीआई के पास रखी अधिशेष निधियों की पार्किंग में गिरावट आई। नतीजतन, 2022-23 के दौरान ओडीसी से

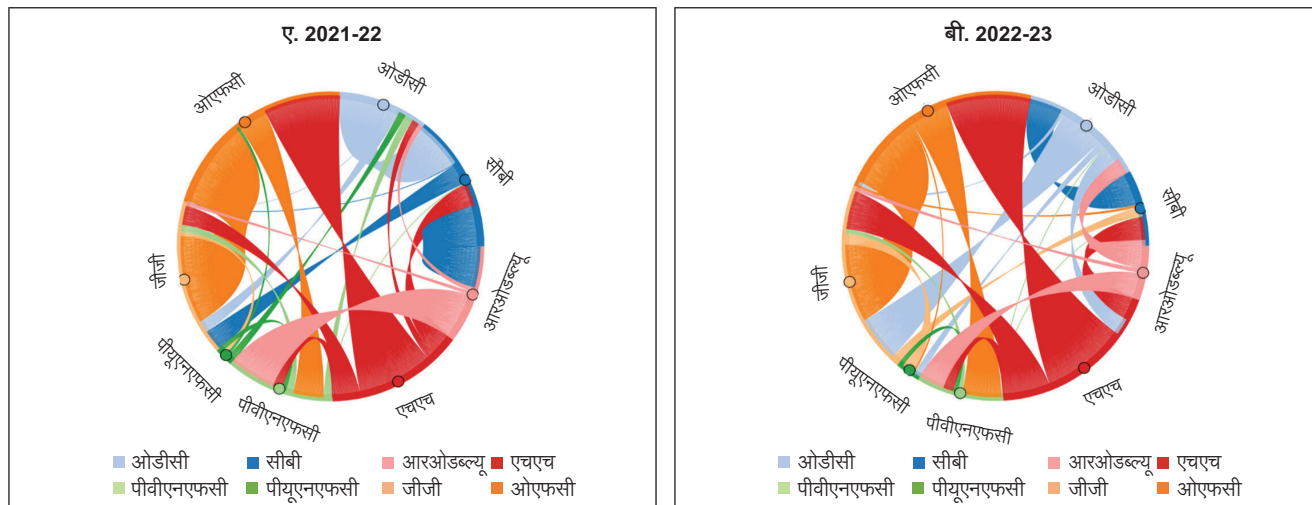
आरबीआई में निवल प्रवाह में उलटफेर देखा गया। एचएच से जीजी, ओएफसी और आरबीआई में निवल प्रवाह की प्रवृत्ति मोटे तौर पर स्थिर रही। हालांकि, एचएच को 2022-23 के दौरान ओडीसी से निवल अंतर्वाह प्राप्त हुआ, जो पिछले वर्ष देखे गए मामूली निवल बहिर्वाह के विपरीत, बढ़ती ऋण मांग से प्रेरित था। इसके अतिरिक्त, ओडीसी से जीजी में प्रवाह की मात्रा में वृद्धि हुई, जो उच्च सार्वजनिक उधार आवश्यकताओं को दर्शाती है। ओडीसी से ऋण में तीव्र वृद्धि के साथ, पीयूएनएफसी 2022-23 में निधियों के निवल उधारकर्ता बन गए, जबकि पिछले वर्ष वे निवल ऋणदाता थे। 2021-22 के विपरीत, जब

सारणी 1: क्षेत्रीय निवल वित्तीय संपत्ति
(मौजूदा बाजार मूल्यों पर जीडीपी का प्रतिशत)

क्षेत्र	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23
1. एफसी	28.4	28.3	28.9	28.1	30.2	31.7	31.3	33.5	37.9	34.0	33.8
2. एनएफसी	-20.8	-21.6	-26.7	-26.1	-30.2	-35.1	-37.6	-38.3	-34.8	-34.9	-34.4
2.1 पीयूएनएफसी	-1.4	-2.0	-2.0	-2.2	-2.3	-2.2	-2.3	-2.7	-3.0	-2.6	-2.0
2.2 पीवीएनएफसी	-19.4	-19.6	-24.7	-23.9	-27.9	-32.8	-35.4	-35.7	-31.8	-32.3	-32.4
3. जीजी	-49.2	-49.9	-49.5	-52.5	-51.2	-51.1	-50.9	-54.2	-68.1	-63.1	-61.3
4. एचएच	74.0	74.1	76.4	77.8	79.1	80.6	82.1	83.3	100.5	93.1	86.8
5. कुल (1+2+3+4)	32.4	30.9	29.0	27.3	27.9	26.1	24.9	24.2	35.5	29.0	24.9
6. आरओडब्ल्यू	24.0	24.3	23.9	23.1	21.4	20.8	21.0	19.6	19.0	17.5	17.2

स्रोत: लेखकों की गणना।

चार्ट 5: क्षेत्रों में प्रवाह



नोट: कॉर्ड अंतर-क्षेत्रीय प्रवाह को दर्शाते हैं, तथा आर्क की लंबाई कुल अर्थव्यवस्था में प्रवाह के सापेक्ष हिस्से के संदर्भ में संस्थागत क्षेत्र की भागीदारी को दर्शाती है। एक क्षेत्र के रंग आधार से दूसरे क्षेत्र तक कॉर्ड का विस्तार निवल उधार दर्शाता है।

स्रोत: लेखकों की गणना।

जीजी को आरबीआई से निधियों का निवल प्रवाह प्राप्त हुआ, तो 2022-23 में एक उलटफेर देखा गया, जो आरबीआई के पास रखे गए केंद्र सरकार के ऋण प्रतिभूतियों के मोचन को दर्शाता है। क्षेत्रवार प्रवाह संबंधी अधिक जानकारी पर बाद के खंडों में चर्चा की गई है।

IV.1 वित्तीय निगम

IV.1.1 केंद्रीय बैंक

वर्ष 2022-23 में, आरबीआई की वित्तीय आस्तियों और देनदारियों की वृद्धि घटकर क्रमशः 2.5 प्रतिशत (वर्ष 2021-22 में 8.4 प्रतिशत) और (-) 1.6 प्रतिशत (वर्ष 2021-22 में 10.1 प्रतिशत) रह गई⁶। आस्ति पक्ष पर, विदेशी मुद्रा आस्तियों, विशेष रूप से विदेशी संस्थानों के पास जमाराशि⁷, घटकर मार्च 2023 के अंत में 98.0 बिलियन अमरीकी डॉलर रह गई, जो मार्च 2022 के अंत में 177.7 बिलियन अमरीकी डॉलर थीं (आरबीआई, 2022 और 2023)। डिजिटल भुगतानों की बढ़ती

प्राथमिकता के बीच आरबीआई की मुद्रा देनदारी की वृद्धि पिछले वर्ष के 9.9 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में 7.8 प्रतिशत हो गई। मौद्रिक नीति रुख में पहले से उल्लेखित परिवर्तन के कारण आरबीआई की जमा देनदारी में वर्ष 2022-23 में 23.4 प्रतिशत की गिरावट आई।

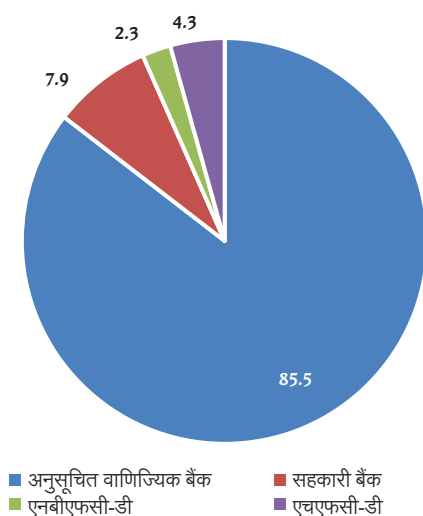
IV.1.2 अन्य निक्षेपागार निगम

केंद्रीय बैंक के अलावा अन्य निक्षेपागार निगम मूल रूप से अपनी मुख्य गतिविधि के रूप में वित्तीय मध्यस्थता में लगे हुए हैं, जो ज्यादातर जमा या बाजार उधार के माध्यम से वित्त पोषित होते हैं। भारतीय वित्तीय क्षेत्र में, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों सहित) ओडीसी के सबसे बड़े उप-क्षेत्र हैं, जिनकी कुल वित्तीय आस्तियों में 85.5 प्रतिशत हिस्सेदारी है, इसके बाद सहकारी बैंक आते हैं। निरंतर ऋण मांग के कारण ओडीसी के तुलन पत्र में 2020-21 से तीव्र वृद्धि देखी गई है। 2022-23 के दौरान ओडीसी की वित्तीय आस्तियों और देनदारियों में क्रमशः 11.7 प्रतिशत और 11.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो 2014-15 के बाद से उनकी उच्चतम वृद्धि है (चार्ट 6 और 7)।

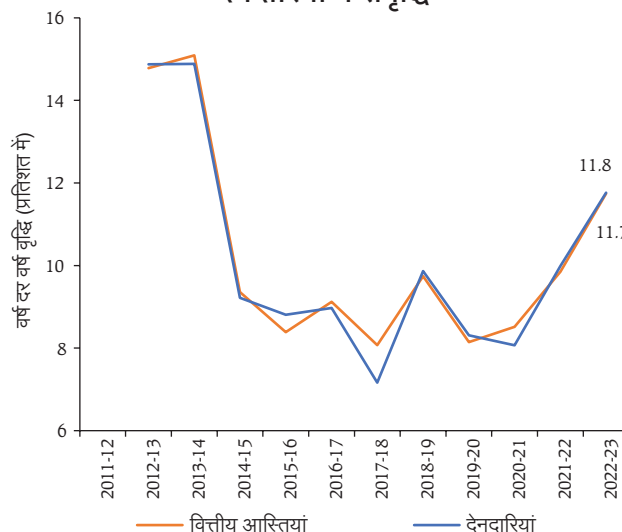
जबकि ओडीसी की जमा वृद्धि पिछले वर्ष के 9.6 प्रतिशत से बढ़कर 2022-23 के दौरान 10.4 प्रतिशत हो

⁶ यह ध्यान में लिया जा सकता है कि एफएसएफ में, वित्तीय देनदारियों में आरक्षित निधि शामिल नहीं होती है जबकि वित्तीय आस्तियों में अचल संपत्तियां शामिल नहीं होती हैं, जिससे वित्तीय आस्तियों और वित्तीय देनदारियों की वृद्धि दरों में विचलन होता है।

⁷ विदेशी संस्थाओं में धारित जमाराशियों में विदेशी केंद्रीय बैंकों, बैंक ऑफ इंटरनेशनल सेटलमेंट (बीआईएस), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ), विदेशी वाणिज्यिक बैंकों के साथ-साथ बाहरी आस्ति प्रबंधकों (ईएएम) द्वारा धारित जमाराशियां शामिल हैं।

चार्ट 6: ओडीसी – वित्तीय आस्तियों में हिस्सेदारी
(मार्च 2023 के अंत तक, प्रतिशत में)

स्रोत: लेखकों की गणना।

चार्ट 7: ओडीसी - वित्तीय आस्तियों और देनदारियों में संवृद्धि

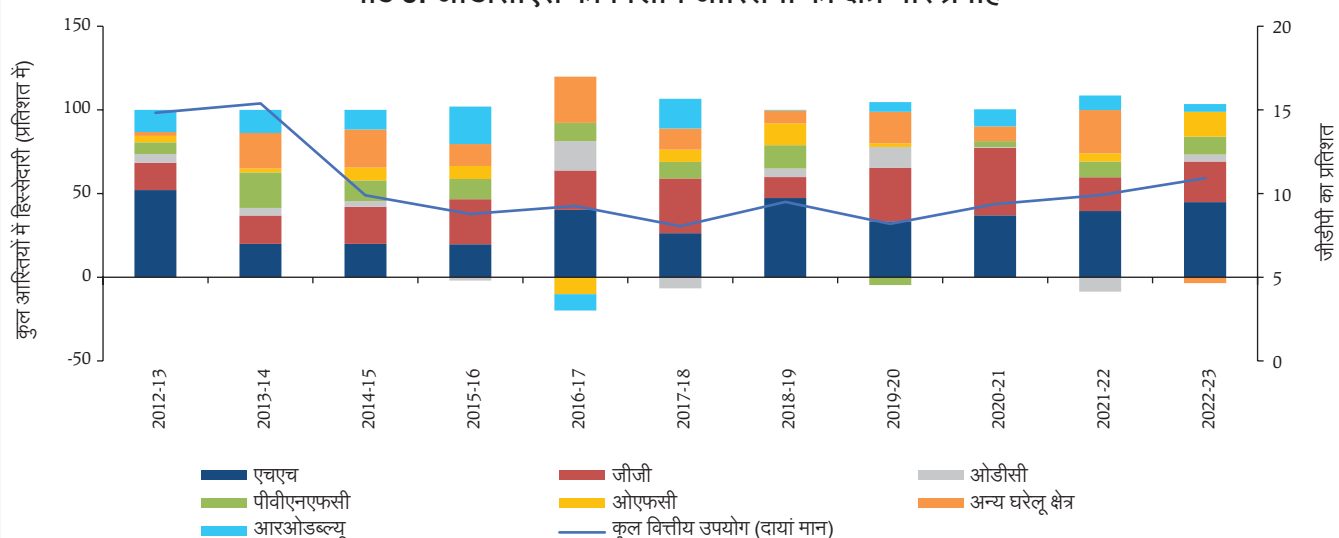
स्रोत: लेखकों की गणना।

गई, ऋण प्रतिभूतियों के माध्यम से ओडीसी की उधारी में पिछले वर्ष की 5.9 प्रतिशत की गिरावट की तुलना में 25.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ऋण और अग्रिम के रूप में ओडीसी से निधि प्रवाह में एचएच क्षेत्र का बड़ा हिस्सा बना रहा। जबकि ओडीसी से जीजी, ओएफसी और पीवीएनएफसी में निधि का प्रवाह बढ़ा, आरओडब्ल्यू में प्रवाह में कमी देखी गई। मुख्य रूप से, आरबीआई धारित जमाराशियों में गिरावट के कारण,

अन्य घरेलू क्षेत्रों से ओडीसी द्वारा निवल अंतर्वाह देखा गया। (चार्ट 8)।

IV.1.3 अन्य वित्तीय निगम

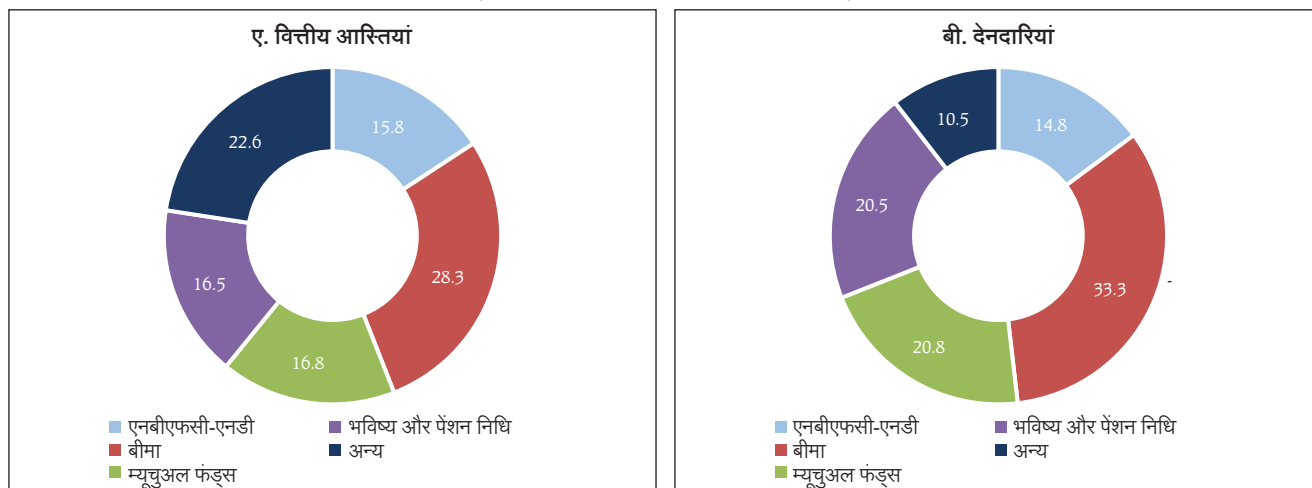
ओएफसी क्षेत्र में वित्तीय आस्तियों और देनदारियों के वितरण में बीमा निगमों का वर्चस्व है, उसके बाद म्यूचुअल फंड और पेंशन तथा भविष्य निधि (चार्ट 9) का स्थान आता है।

चार्ट 8: ओडीसीएस की वित्तीय आस्तियों का क्षेत्र-वार प्रवाह

नोट: अन्य घरेलू क्षेत्रों में आरबीआई, पीयूएनएफसी और अन्यत्र गैर-वर्गीकृत कंपनियां शामिल हैं।

स्रोत: लेखकों की गणना।

चार्ट 9: ओएफसी की संरचना
(मार्च 2023 के अंत तक, प्रतिशत में)



नोट: अन्य में अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान (एआईएफआई), राज्य वित्त निगम (एसएफसी), राज्य औद्योगिक विकास निगम (एसआईडीसी) और जमाराशि न लेने वाली आवास वित्त कंपनियां (एचएफसी-एनडी) शामिल हैं।

स्रोत: लेखकों की गणना।

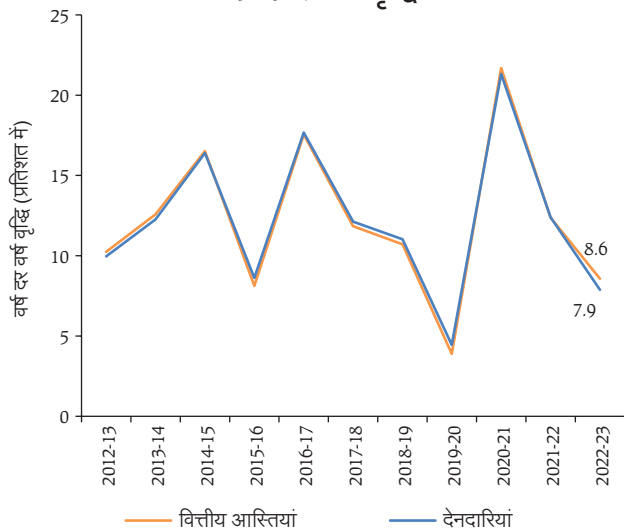
महामारी से प्रेरित मांग के दम पर दो साल तक दोहरे अंकों की वृद्धि देखने के बाद, बीमा क्षेत्र की वित्तीय आस्तियों और देनदारियों की वृद्धि क्रमशः 2022-23 में 8.6 प्रतिशत (2021-22 में 12.4 प्रतिशत) और 7.9 प्रतिशत (12.4 प्रतिशत) तक कम हो गई (चार्ट 10)।

म्यूचुअल फंड (एमएफ) के प्रबंधन के तहत आस्तियों की वार्षिक वृद्धि (एयूएम) महामारी वर्ष (2020-21) के दौरान ₹9.2

लाख करोड़ से घटकर 2022-23 में ₹1.9 लाख करोड़ हो गई, जिसका मुख्य कारण आस्तियों की कीमतों में नरमी है (चार्ट 11)। मार्च 2023 के अंत तक, म्यूचुअल फंड उद्योग का एयूएम 14.57 करोड़ म्यूचुअल फंड खातों/फोलियो (सेबी 2023) के साथ ₹39.4 लाख करोड़ था।

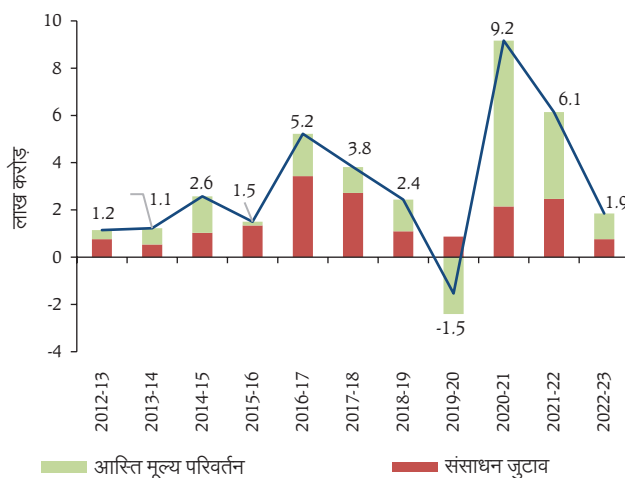
पेंशन और भविष्य निधि (जीडीपी का 14.4 प्रतिशत) के तुलन पत्र में 2022-23 में 16.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की

चार्ट 10: बीमा क्षेत्र - वित्तीय आस्तियों और देनदारियों में वृद्धि



स्रोत: लेखकों की गणना।

चार्ट 11: म्यूचुअल फंड में रुझान



नोट: वर्ष के दौरान एयूएम में परिवर्तन और संसाधन जुटाने के बीच के अंतर के रूप में आस्ति मूल्य परिवर्तन का अनुमान लगाया जाता है।

स्रोत: लेखकों की गणना।

गई, जो पिछले वर्ष के 18.1 प्रतिशत की वृद्धि के बराबर है। इक्विटी निवेश में बढ़ती रुचि के बावजूद, पेंशन और भविष्य निधि की कुल वित्तीय आस्तियों में सरकारी प्रतिभूतियों का 50.9 प्रतिशत हिस्सा रहा।

IV.2 गैर-वित्तीय निगम

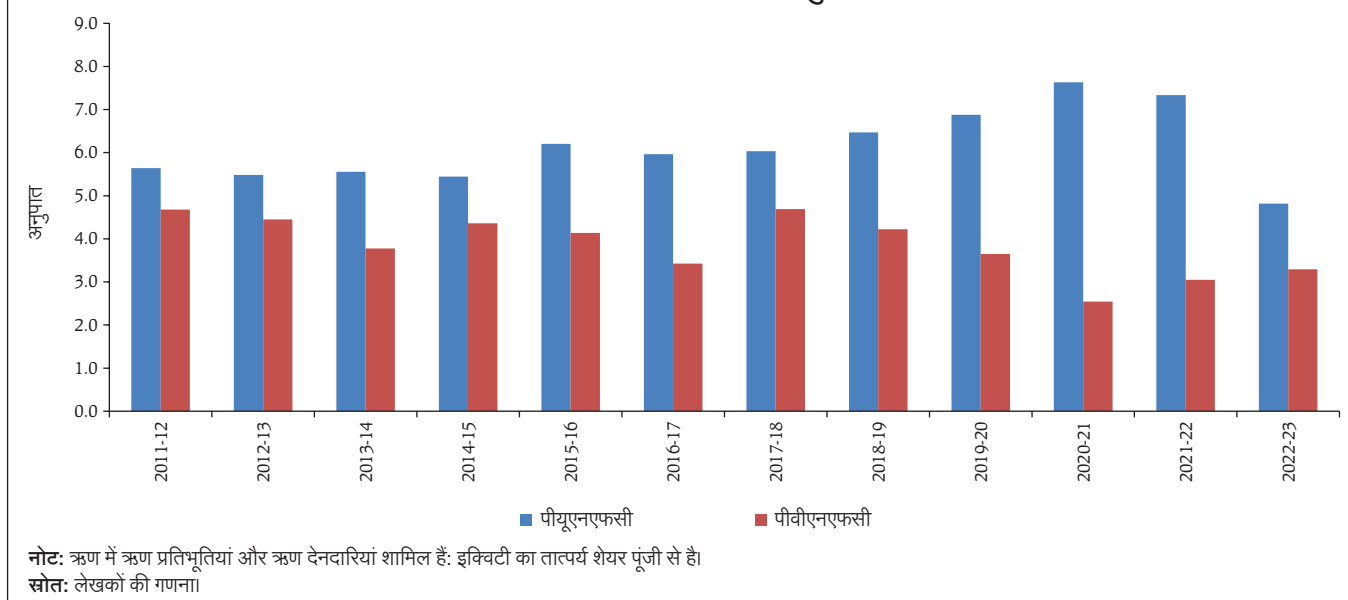
गैर-वित्तीय निगमों (एनएफसी) [मुख्य रूप से माल और गैर-वित्तीय सेवाओं के उत्पादन में लगी संस्थाएँ] में सार्वजनिक एनएफसी (पीयूएनएफसी) [जैसे केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (सीपीएसई), बिजली कंपनियाँ और बंदरगाह ट्रस्ट] और निजी एनएफसी (पीवीएनएफसी) शामिल हैं, जिनमें गैर-सरकारी, गैर-वित्तीय कंपनियाँ शामिल हैं। वर्ष 2022-23 के दौरान, एनएफसी ने अपने संसाधन घाटे को पिछले वर्ष के 4.5 प्रतिशत से घटाकर जीडीपी का 4.4 प्रतिशत कर दिया। इसके अलावा, एनएफसी का एनएफडब्ल्यू नकारात्मक रहा, हालाँकि यह पिछले वर्ष के (-) 34.9 प्रतिशत से घटकर 2022-23 में जीडीपी का (-) 34.4 प्रतिशत हो गया। विशेष रूप से, विनिर्माण क्षेत्र में पूंजी निवेश में वृद्धि के साथ, पीयूएनएफसी का ऋण-से-इक्विटी (डी/ई) अनुपात 2022-23 में गिर गया। इसके विपरीत, पीवीएनएफसी द्वारा ऋण की बढ़ती मांग के कारण पीवीएनएफसी का डी/ई अनुपात बढ़ा (चार्ट 12)।

IV.3 सामान्य सरकार

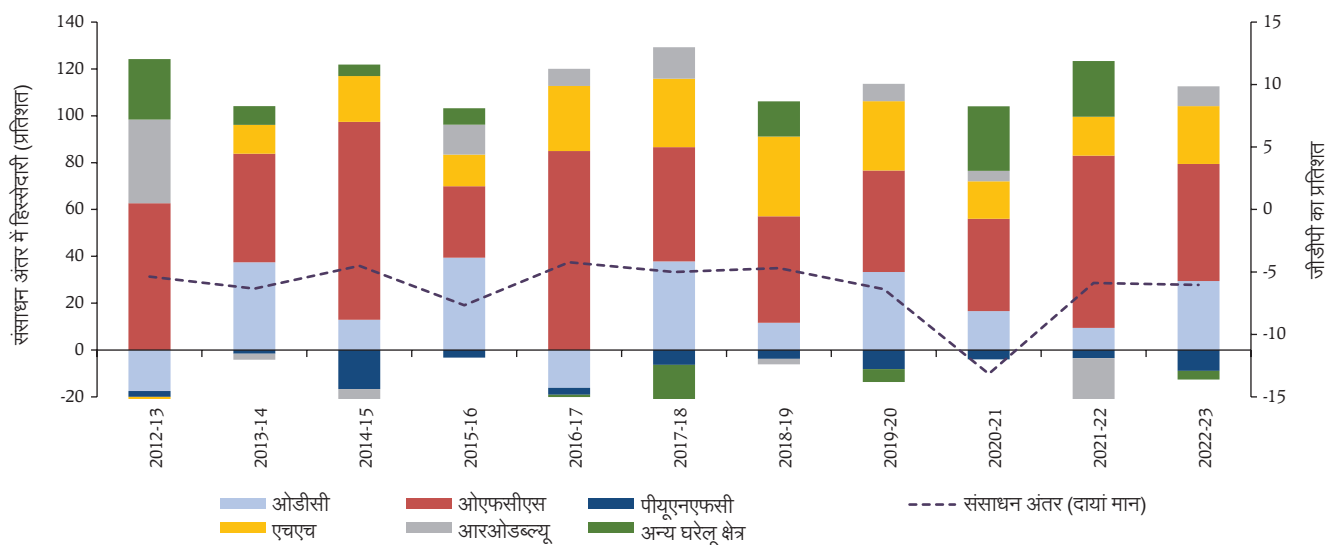
महामारी के बाद, केंद्र सरकार द्वारा राजकोषीय समेकन ने सकल राजकोषीय घाटे को 2022-23 में जीडीपी के 6.4 प्रतिशत तक नीचे ला दिया, जो पिछले वर्ष 6.7 प्रतिशत और 2020-21 में 9.2 प्रतिशत था (भारत सरकार 2024)। राज्य सरकारों का संयुक्त सकल राजकोषीय घाटा (जीएफडी) पिछले वर्ष के 3.4 प्रतिशत की तुलना में 2022-23 में जीडीपी का 2.8 प्रतिशत था। 2022-23 में सामान्य सरकार⁸ का वित्तीय संसाधन अंतर जीडीपी का 6.0 प्रतिशत रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 5.9 प्रतिशत था (चार्ट 13)। सामान्य सरकारी ऋण 2021-22 में सकल घरेलू उत्पाद के 86.8 प्रतिशत से घटकर 84.3 प्रतिशत हो गया।

केंद्र सरकार की वित्तीय आस्तियों के बड़े हिस्से सहित वैधानिक निगमों और संयुक्त स्टॉक कंपनियों में इक्विटी निवेश की संवृद्धि केंद्र सरकार द्वारा पूंजीगत व्यय में की गई वृद्धि के साथ 2022-23 के दौरान 15.5 प्रतिशत (2021-22 में 13.5 प्रतिशत) तक बढ़ गई। 2022-23 के दौरान केंद्र सरकार द्वारा दिए गए कुल ऋण और अग्रिम में 9.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। देनदारियों के मामले में, केंद्र सरकार द्वारा जारी ऋण प्रतिभूतियाँ,

चार्ट 12: ऋण से इक्विटी अनुपात



⁸ एफएसएफ में सामान्य सरकारी खाते गैर-समेकित आधार पर हैं, यानी, अंतर-सरकारी लेन-देन को समायोजित नहीं किया जाता है।

चार्ट 13: सामान्य सरकार का वित्तीय संसाधन अंतर


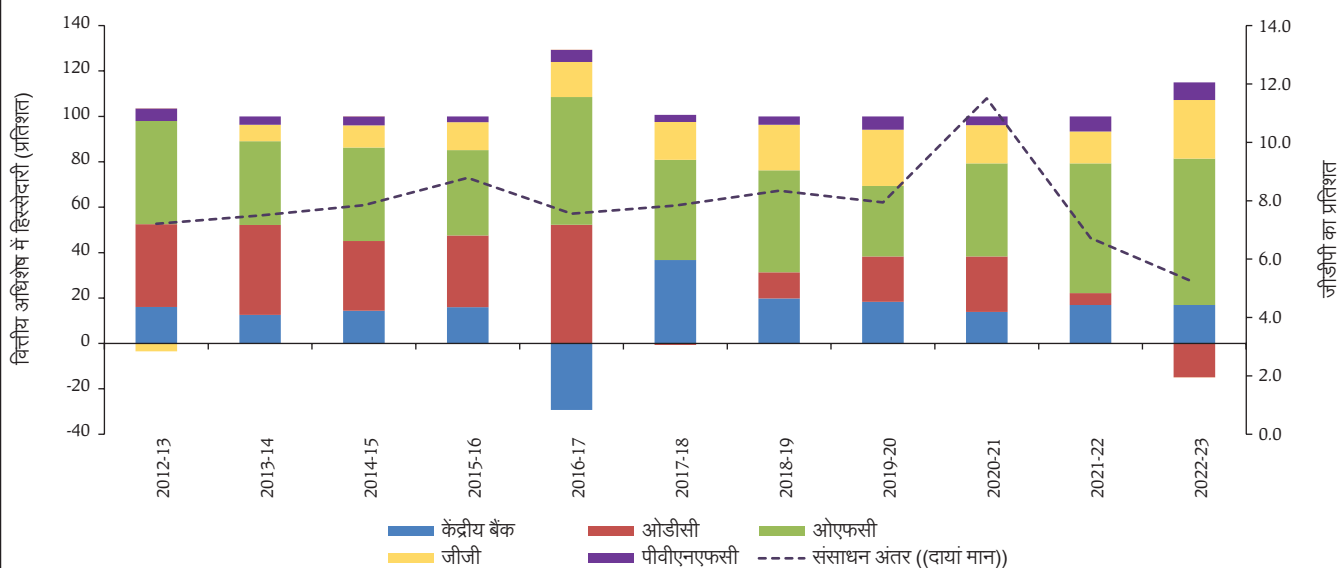
नोट: 'अन्य घरेलू क्षेत्र' में आरबीआई, पीयूएनएफसी तथा अन्यत्र गैर-वर्गीकृत अन्य शामिल हैं।
स्रोत: लेखकों की गणना।

जो मार्च 2023 के अंत तक इसकी कुल देनदारियों का 74.0 प्रतिशत थीं, पिछले वर्ष की तुलना में 11.4 प्रतिशत बढ़ीं।

IV.4 परिवार (एनपीआईएसएच सहित)

2022-23 के दौरान, एचएच का निवल संसाधन संतुलन 2021-22 में 6.7 प्रतिशत और 2020-21 में 11.5 प्रतिशत से घटकर जीडीपी का 5.2 प्रतिशत रह गया, क्योंकि परिवारों ने महामारी वर्ष के दौरान संचित अपनी अतिरिक्त बचत का

आहरण जारी रखा (चार्ट 14)। जबकि वित्तीय आस्तियों का प्रवाह मामूली रूप से बढ़कर जीडीपी का 11.1 प्रतिशत (2021-22 में 10.6 प्रतिशत) हो गया, वहीं एचएच की देनदारियों में 2022-23 में जीडीपी के 5.9 प्रतिशत (2021-22 में 3.8 प्रतिशत) की वृद्धि हुई, क्योंकि एचएच ने बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) दोनों से अधिक उधार लिया। एचएच ऋण के एक बड़े हिस्से का उपयोग अचल संपत्ति के लिए

चार्ट 14: परिवारों का वित्तीय अधिशेष


स्रोत: लेखकों की गणना।

करते हुए, कुल घरेलू बचत में वित्तीय बचत से भौतिक बचत के पक्ष में एक संरचनात्मक बदलाव आया है (एनएसओ, 2024)।

एचएच सेक्टर की वित्तीय आस्तियों के संबंध में, बैंकों, गैर-बैंकों और लघु बचत योजनाओं में जमाराशियों का कुल आस्तियों में अधिकतम हिस्सा है। पिछले वर्ष के 10.5 प्रतिशत की तुलना में 2022-23 में इस क्षेत्र की वित्तीय आस्तियों में 9.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इक्विटी बाजार की स्थितियों में उछाल के कारण इक्विटी और म्यूचुअल फंड में निवेश मजबूत रहा। एचएच द्वारा अपने अधिशेष को सभी क्षेत्रों में आवंटित करने की सामान्य प्रवृत्ति के विपरीत, 2022-23 में मजबूत ऋण मांग के कारण, एचएच ओडीसी से निवल उधारकर्ता बन गए। हालांकि, एचएच की मुद्रा धारिता की वार्षिक वृद्धि डिजिटल भुगतान के लिए बढ़ती प्राथमिकता के साथ कम हो रही है। जहां देनदारियों के मामले में, ओडीसी वित्त का प्राथमिक स्रोत बने रहे, ओडीसी और ओएफसी दोनों से उधारी में वृद्धि हुई। नतीजतन, जीडीपी के प्रतिशत के रूप में घरेलू ऋण एक साल पहले के 38.1 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2023 के अंत तक 39.4 प्रतिशत हो गया। मार्च 2023 के अंत में एचएच वित्तीय आस्तियों का स्टॉक एक साल पहले के 131.2 प्रतिशत से घटकर जीडीपी का 126.2 प्रतिशत हो गया। तदनुसार, उनकी निवल वित्तीय संपत्ति उसी अवधि के 93.1 प्रतिशत से घटकर

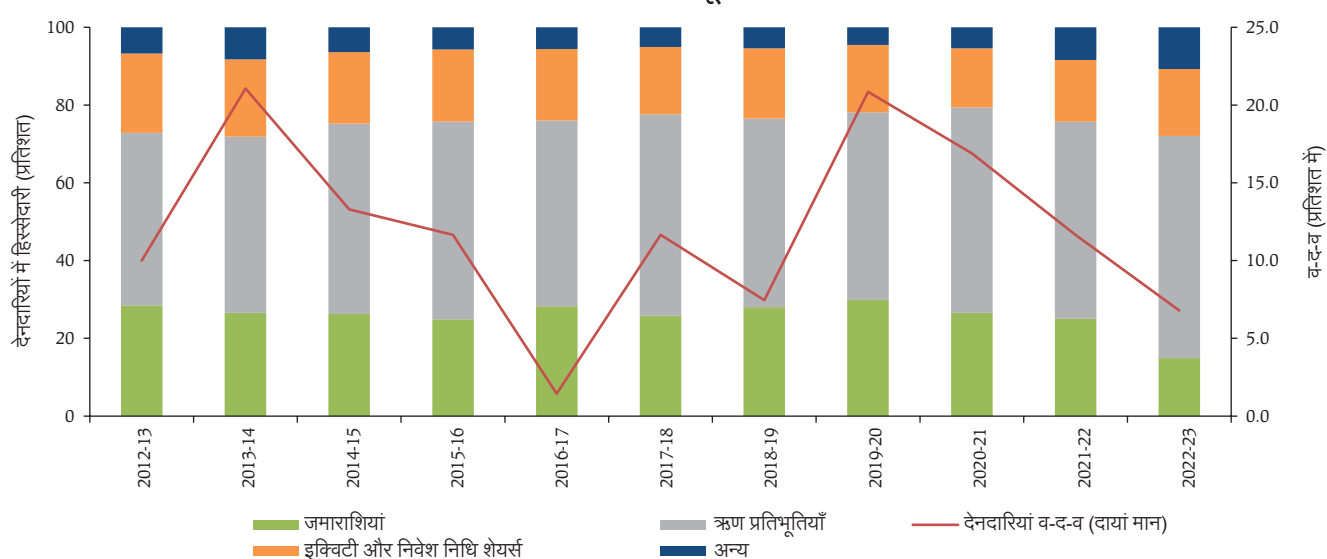
जीडीपी का 86.8 प्रतिशत हो गई, हालांकि यह महामारी से पहले की स्थिति (2019-20 में जीडीपी का 83.3 प्रतिशत) से ऊपर थी [सारणी 1]।

IV.5 शेष विश्व

भारत 2022-23 में आरओडब्ल्यू से निवल उधारकर्ता बना रहा। उच्च पण्य वस्तु घाटे और प्राथमिक आय से संबंधित उच्चतर व्यय के साथ, चालू खाता घाटा पिछले वर्ष के 1.2 प्रतिशत से बढ़कर जीडीपी का 2.0 प्रतिशत हो गया। वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच वित्तपोषण के मामले में, निवल एफडीआई अंतर्वाह 2022-23 में जीडीपी के 0.8 प्रतिशत (पिछले वर्ष में 1.2 प्रतिशत) पर कम रहा, जबकि पोर्टफोलियो निवेश में जीडीपी का (-) 0.2 प्रतिशत [पिछले वर्ष में (-) 0.5 प्रतिशत] का बहिर्वाह देखा गया। मार्च 2023 के अंत तक विदेशी मुद्रा आरक्षित निधियां 28.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर घटकर 578.4 बिलियन अमेरिकी डॉलर रह गई जिसमें से 19.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर की गिरावट मूल्यांकन हानि के कारण हुई। परिणामस्वरूप, 2022-23 में लगातार तीसरे वर्ष आरओडब्ल्यू की देनदारियों की वृद्धि धीमी हो गई (चार्ट 15)।

हालांकि, ऋण प्रतिभूतियों के उस हिस्से में 2022-23 के दौरान और अधिक वृद्धि हुई जो आरओडब्ल्यू की देनदारियों

चार्ट 15: आरओडब्ल्यू की देनदारियां



स्रोत: लेखकों की गणना।

का मुख्य घटक है, क्योंकि विदेशी केंद्रीय और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा धारित आरबीआई की विदेशी मुद्रा जमा राशि को ऋण प्रतिभूतियों से प्रतिस्थापित कर दिया गया (आरबीआई 2023)।

IV.6 क्षेत्रवार और लिखत-वार हीट मैप

घरेलू क्षेत्रों की वित्तीय आस्तियों और देनदारियों में हुई वृद्धि में क्षेत्रवार योगदान के हीट मैप क्रमशः सारणी 2 और 3 में प्रस्तुत किए गए हैं। 2022-23 के दौरान घरेलू क्षेत्रों की वित्तीय आस्तियों में 9.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ओडीसी, एचएच और ओएफसी ने कुल परिवर्तन में लगभग 80 प्रतिशत का योगदान दिया, जिसमें ओडीसी का योगदान अधिक (28.7 प्रतिशत) था। लिखतों के संदर्भ में, ऋण और अग्रिमों ने आस्तियों की वृद्धि में सबसे अधिक योगदान दिया, इसके बाद ऋण प्रतिभूतियाँ और जमा राशियों का स्थान रहा। केंद्रीय बैंक और ओडीसी को छोड़कर, सभी क्षेत्रों में जमा राशियों में वृद्धि देखी गई, जिसमें एचएच का अधिकतम योगदान रहा। सभी संस्थागत क्षेत्रों में

इक्विटी निवेश में वृद्धि देखी गई। बीमा, पेंशन और भविष्य निधि में एकमात्र योगदानकर्ता एचएच क्षेत्र ने इस क्षेत्र में निवेश की गई आस्तियों में 10.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी (सारणी 2)।

वर्ष 2022-23 के दौरान घरेलू क्षेत्रों की देनदारियों में 10.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जिसका श्रेय ओडीसी, एनएफसी और जीजी को जाता है। लिखत-वार ऋण और उधार प्रमुख रहे, हालांकि, ओडीसी द्वारा जमा की गई राशियों ने देनदारियों में परिवर्तन में सबसे अधिक योगदान दिया, इसके बाद जीजी द्वारा जारी ऋण प्रतिभूतियों का स्थान रहा। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बैंकिंग प्रणाली में चलनिधि अधिशेष में कमी के कारण केंद्रीय बैंक की जमा देयता कम हो गई, जबकि आरबीआई की विदेशी मुद्रा आस्तियों में गिरावट के कारण आरओडब्ल्यू की जमा देयता कम हो गई। ऋण प्रतिभूतियों के रूप में आरओडब्ल्यू की देनदारियों में 20.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई (सारणी 3)।

सारणी 2: हीट मैप: वित्तीय आस्तियां 2022-23

वित्तीय आस्तियां	केंद्रीय बैंक	ओडीसी	ओएफसी	एनएफसी	जीजी	एचएच	घरेलू क्षेत्रीय हिस्सेदारी	आरओडब्ल्यू
मौद्रिक स्वर्ण और एसडीआर	15.0 (0.5)	-	-	-	6.3 (0.1)	-	12.1 (0.6)	5.5 (1.2)
मुद्रा	..	..	19.0 (0.1)	..	..	8.2 (2.2)	7.9 (2.3)	-
जमा राशियां	-40.1 (-5.1)	-10.0 (-2.7)	12.6 (1.9)	13.5 (3.5)	12.3 (2.3)	9.6 (13.6)	5.6 (13.6)	8.0 (10.6)
ऋण प्रतिभूतियां	13.0 (5.2)	10.4 (6.2)	10.1 (8.8)	16.6 (1.3)	-3.3 (-0.3)	19.7 (0.7)	10.6 (21.9)	3.7 (4.8)
ऋण और अग्रिम	38.1 (0.8)	16.3 (23.1)	16.8 (7.2)	10.5 (3.0)	9.4 (0.9)	-	15.6 (35.0)	11.2 (20.6)
इक्विटी और निवेश निधि	..	20.6 (0.3)	9.2 (3.6)	6.6 (3.4)	15.4 (2.1)	8.7 (2.3)	8.8 (11.8)	5.5 (33.5)
बीमा, पेंशन और पीएफ	-	..	-	..	-	10.5 (9.6)	10.5 (9.6)	-
अन्य लेनदारी लेखा	32.2 (0.1)	7.9 (0.3)	8.0 (0.8)	10.8 (4.3)	48.8 (0.8)	27.3 (0.2)	11.5 (6.5)	22.3 (29.3)
अन्य	-	14.0 (1.4)	8.5 (0.2)	-13.3 (-2.8)	..	-	-3.6 (-1.2)	-
घरेलू क्षेत्रीय हिस्सेदारी	2.5 (1.5)	11.7 (28.7)	11.4 (22.6)	7.3 (12.8)	11.3 (5.9)	9.8 (28.6)	9.8 (100)	8.3 (100)

टिप्पणियाँ: 1. हरा और लाल रंग क्रमशः आस्तियों में वृद्धि और कमी को दर्शाते हैं।

2. आस्तियों के मूल्य में परिवर्तन में उच्च योगदान, उच्च रंग सांद्रता द्वारा दर्शाया जाता है।

3. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े घरेलू अर्थव्यवस्था की आस्तियों में कुल परिवर्तन में लिखत-वार योगदान को दर्शाते हैं।

4. आरओडब्ल्यू के कोष्ठक में दिए गए आंकड़े आरओडब्ल्यू की आस्तियों में कुल परिवर्तन के लिखत-वार योगदान को दर्शाते हैं।

5. "-" शून्य को इंगित करता है, और ".." नगण्य को इंगित करता है।

स्रोत: लेखकों की गणना।

सारणी 3: हीट मैप: देनदारियां 2022-23

देनदारियां	केंद्रीय बैंक	ओडीसी	ओएफसी	एनएफसी	जीजी	एचएच	घरेलू क्षेत्रीय हिस्सेदारी	आरओडब्ल्यू
मौद्रिक स्वर्ण और एसडीआर	-	-	-	-	5.5 (0.1)	-	5.5 (0.1)	6.4 (2.5)
मुद्रा	7.8 (2.2)	-	-	-	-	-	7.8 (2.2)	-
जमाराशियां	-23.4 (-3.6)	10.4 (18.3)	13.5 (0.5)	15.8 (0.1)	13.3 (4.3)	-	8.6 (19.6)	-36.3 (-133.9)
ऋण प्रतिभूतियां	-	25.0 (1.0)	14.0 (2.1)	2.0 (0.3)	11.0 (14.8)	-	10.7 (18.3)	20.4 (152.1)
ऋण और अग्रिम	-	14.0 (3.5)	19.0 (3.1)	9.8 (8.7)	12.3 (1.2)	18.0 (14.5)	14.0 (31.0)	47.5 (7.5)
इक्विटी और निवेश निधि	--	7.3 (0.2)	5.1 (1.9)	4.4 (1.4)	-	-	4.9 (3.4)	15.6 (36.5)
बीमा, पेंशन और पीएफ	19.7 (0.1)	..	11.0 (9.1)	-	3.5 (0.3)	-	10.5 (9.5)	-
अन्य देनदारी लेखा	132.1 (0.5)	22.5 (0.8)	8.4 (0.1)	8.6 (8.3)	-28.2 (-0.1)	24.4 (0.3)	9.6 (9.9)	51.3 (35.2)
अन्य	-	29.6 (1.7)	..	10.3 (4.3)	..	-	12.4 (6.0)	-
घरेलू क्षेत्रीय हिस्सेदारी	-1.6 (-0.7)	11.8 (25.5)	10.8 (16.7)	8.4 (23.2)	11.0 (20.5)	18.1 (14.8)	10.4 (100.0)	6.8 (100.0)

टिप्पणियाँ: 1. लाल और हरा रंग क्रमशः देनदारियों में वृद्धि और कमी को दर्शाते हैं।

2. देनदारियों के मूल्य में परिवर्तन में उच्च योगदान उच्च रंग सांद्रता द्वारा दर्शाया जाता है।

3. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े घरेलू अर्थव्यवस्था की देनदारियों में कुल परिवर्तन में लिखत-वार योगदान दर्शाते हैं।

4. आरओडब्ल्यू के कोष्ठक में दिए गए आंकड़े आरओडब्ल्यू की देनदारियों में कुल परिवर्तन के लिखत-वार योगदान को दर्शाते हैं।

5. "-" शून्य को इंगित करता है, और ".." नगण्य को इंगित करता है।

स्रोत: लेखकों की गणना।

V. निष्कर्ष

2022-23 के दौरान वित्तीय स्टॉक और प्रवाह सामान्य सरकार और निजी गैर-वित्तीय निगमों की वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में अधिशेष क्षेत्रों के रूप में परिवारों और वित्तीय निगमों की निरंतर भूमिका को उजागर करते हैं। 2022-23 के दौरान घरेलू क्षेत्रों की वित्तीय आस्तियों में 9.8 प्रतिशत, जबकि उनकी देनदारियों में 10.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। घरेलू क्षेत्र की निवल वित्तीय संपत्ति (एनएफडब्ल्यू) पिछले वर्ष के 29.0 प्रतिशत की तुलना में मार्च 2023 के अंत में जीडीपी के 24.9 प्रतिशत तक गिर गई, जो ऋण की बढ़ती मांग से प्रेरित मुख्य रूप से वित्तीय आस्तियों की तुलना में देनदारियों की उच्च वृद्धि के कारण थी। हालांकि, एनएफडब्ल्यू 2019-20 के महामारी-पूर्व स्तर 24.2 प्रतिशत से मार्च 2023 के अंत में ऊपर रहा।

संदर्भ

GoI (2024). Union Budget 2024-2025. Ministry of Finance, Government of India.

NSO (2024). National Accounts Statistics 2024. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.

OECD (2017). Understanding Financial Accounts. Edited by Peter van de Ven, P. and D. Fano (eds.), OECD Publishing, Paris, <https://doi.org/10.1787/9789264281288-en>.

RBI (2023). Half Yearly Report on Management of Foreign Exchange Reserves: October 2022 - March 2023. Reserve Bank of India.

RBI (2022). Half Yearly Report on Management of Foreign Exchange Reserves: October 2021 - March 2022. Reserve Bank of India.

SEBI (2023). Annual Report 2022-23. Securities and Exchange Board of India.